Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

समाजशास्त्रीय सिद्धांत

(Sociological Theories)

B.S.O.C.-133

B.A. General - 3rd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Bhavya Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

समाजशास्त्रीय सिद्धांत

(Sociological Theories)

Question Paper–June-2023 (Solved) 1
Question Paper–December-2022 (Solved) 1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	कार्ल मार्क्स की कृतियों के दार्शनिक आधार (Philosophical Foundations of Karl Marx's Works)	1
2.	द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (Dialectical Materialism)	19
3.	'वर्ग एवं वर्ग संघर्ष' ('Class and Class Struggle')	34
4.	'एमिल दर्खाइम की कृतियों के दार्शनिक आधार' ('Philosophical Foundations of Emile Darkhime's Works')	52
5.	'सामाजिक तथ्य' ('Social Facts')	65
6.	'एकात्मकता के प्रकार' ('Forms of Social Solidarity')	76
7.	'मैक्स वेबर की कृतियों के दार्शनिक आधार' ('Philosophical Foundations of Max Weber's Works')	85
8.	सामाजिक क्रिया और आदर्श प्ररूप (Social Action and Model Types)	95

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
9.	‘शक्ति एवं सत्ता’ (Power and Authority)	108
10.	‘धर्म’ (‘Religion’)	118
11.	‘आर्थिकी’ (‘Economy’)	129
12.	समाज, धर्म और एकात्मकता (Society, Religion and Solidarity)	142

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

समाजशास्त्रीय सिद्धांत

(Sociological Theories)

B.S.O.C.-133

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. तर्कसंगत पूंजीवाद की वृद्धि में योगदान देने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-132, 'पूंजीवाद के बारे में मैक्स वेबर के विचार'

प्रश्न 2. समाज में श्रम-विभाजन पर दुर्खीम और मार्क्स के विचारों की तुलना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-131, 'दर्खाइम तथा मार्क्स के विचारों की तुलना'

प्रश्न 3. प्राधिकार की संकल्पना का वर्णन वेबर के नजरिए से कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-111, प्रश्न 3

प्रश्न 4. सामाजिक तथ्य क्या है? सामाजिक तथ्यों के अवलोकन संबंधी नियमों को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-66, 'सामाजिक तथ्य', पृष्ठ-70, 'सामाजिक तथ्यों के अवलोकन के लिए नियम'

प्रश्न 5. क्या समाज व्यक्ति से अग्रगामित होता है। दुर्खीम के नजरिए से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-56, प्रश्न 2

प्रश्न 6. मार्क्स की रचनाओं पर राजनीतिक अर्थव्यवस्था परिप्रेक्ष्य के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 4

प्रश्न 7. सामाजिक परिवर्तन एवं क्रांति पर मार्क्स के दृष्टिकोण की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-21, 'सामाजिक परिवर्तन एवं क्रांति'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो संक्षिप्त पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) सामंती समाज

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-21, 'सामंतवादी समाज'

(ख) विवेकीकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-104, '(4) बौद्धिक प्रकार (Rationalistic Type)'

(ग) आदर्श प्रारूप

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-88, 'आदर्श प्रारूप', पृष्ठ-94, प्रश्न 3

(घ) वरस्टेन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-150, प्रश्न 6

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

समाजशास्त्रीय सिद्धांत

(Sociological Theories)

B.S.O.C.-133

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. मार्क्स के विचार पर जर्मन दर्शन और आदर्शवाद के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'जर्मन दर्शन और आदर्शवाद'

प्रश्न 2. आत्महत्या के अध्ययन में दुर्खीम के प्रमुख विचार की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-60, प्रश्न 3

प्रश्न 3. आदर्श प्ररूप क्या हैं? उनकी मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–मैक्स वेबर के समकालीन विद्वानों का मानना था कि सामाजिक घटनाओं पर प्राकृतिक विज्ञान की पद्धति के अनुसार विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-8, पृष्ठ-96, 'व्याख्या', 'संरचना' और 'विशेषताएं'

प्रश्न 4. श्रम-विभाजन पर मार्क्स और दुर्खीम के विचारों की तुलना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-131, दर्खाइम तथा मार्क्स के विचारों की तुलना'

प्रश्न 5. सामाजिक तथ्य क्या है? सामान्य और व्याधिकीय सामाजिक तथ्यों के बीच अंतर करने के नियमों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-66, 'सामाजिक तथ्य', पृष्ठ-73, प्रश्न 3

प्रश्न 6. पूर्वनियति के सिद्धांत के सामाजिक प्रभाव की व्याख्या कीजए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-32, 'नियतिवाद का समर्थन', अध्याय-10, पृष्ठ-120, 'कैल्विनवाद और जग से जुड़ी हुई तपस्या', पृष्ठ-122, प्रश्न 2

प्रश्न 7. वेबर के दृष्टिकोण के संदर्भ में तर्कसंगत पश्चिमी दुनिया के भविष्य की आलोचनात्मक जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-134, 'तर्कसंगत पाश्चात्य समाज का भविष्य लोहे का पिंजरा', 'मार्क्स और वेबर के विचारों की तुलना'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

***(i)* वरस्टेहन**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-150, प्रश्न 6

***(ii)* विलगीकरण**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-36, 'मार्क्स की अलगाव की अवधारणा'

***(iii)* समाज का आदिम-सामुदायिक प्रारूप**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-20, 'आदिम साम्यवादी समाज', अध्याय-3, पृष्ठ-35, 'आदिम साम्यवादी अवस्था'

***(iv)* सामूहिक विवेक**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-78, प्रश्न 1 *(iii)*

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समाजशास्त्रीय सिद्धांत
(Sociological Theories)

कार्ल मार्क्स की कृतियों के दार्शनिक आधार 1
(Philosophical Foundations of Karl Marx's Works)

परिचय

कार्ल मार्क्स एक महान विचारक थे, जिन्होंने उत्पादन की पूंजीवादी रीति, वर्ग एवं वर्ग संघर्ष, राजनीतिक अर्थव्यवस्था, अलगाववाद जैसे अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर विभिन्न लेख लिखे हैं। इस इकाई में कार्ल मार्क्स के जीवन-परिचय एवं उनके बौद्धिक विचारों का वर्णन किया जाएगा जो सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

कार्ल मार्क्स का जीवन-परिचय

कार्ल मार्क्स के संपूर्ण जीवन को पांच भागों में विभाजित कर प्रत्येक प्रावस्था का गहन अध्ययन किया जाएगा।

प्रारंभिक वर्ष

कार्ल हाईनरिश मार्क्स का जन्म 5 मई, 1818 को जर्मनी के राइनलैंड प्रान्त के ट्रियर नामक नगर में हुआ। उनके पिता हाईनरिश मार्क्स तथा माता हैनरिटा मार्क्स थी।

जर्मनी के एक छोटे समुदाय 'यहूदी' के सदस्य हाईनरिश मार्क्स ने नैपोलियन के शासनकाल में नए व्यावसायिक एवं व्यापारिक अवसरों का लाभ उठाया। परंतु 1828 में नैपोलियन की हार के बाद, जर्मनी राइनलैंड प्रांत को प्रशा राज्य के अधीन कर दिया गया। सामन्तवादी राज्यों के बीच विभाजन होने के कारण यहूदी संप्रदाय को पुनःधार्मिक, राजनैतिक एवं प्रजातीय प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। हाईनरिश ने भी 1817 में ईसाई चर्च में सदस्यता प्राप्त की, परिणामस्वरूप उन्हें विशिष्ट दयनीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, जिसका प्रभाव कार्ल मार्क्स के धर्म के प्रति उग्र दृष्टिकोण में देखने को मिलता है। वर्ष 1936 में कार्ल मार्क्स ने अपने पिता की सलाह पर बर्लिन विश्वविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया।

बर्लिन काल

बर्लिन विश्वविद्यालय में कार्ल मार्क्स हीगलवादी दर्शन से प्रभावित हुए। यह कालावधि जर्मन बुद्धिजीवियों के लिए अत्यन्त निराशाजनक थी। कार्ल मार्क्स ने हीगल के मुख्य शिष्य एडवर्ड गांस के व्याख्यानों से प्रभावित होकर सैद्धान्तिक आलोचना की पद्धति सीखी। उन्होंने प्रत्यक्षवाद पर हीगलवादी विचारों के सम्मुख सिद्धांत की रचना करने का प्रयास किया। मार्क्स ने पिता की इच्छा के विरुद्ध जाकर विधिक अध्ययन को छोड, दर्शन शास्त्र का अध्ययन आरंभ किया। शिक्षा समापन के पश्चात, मार्क्स कोलोन शहर से प्रकाशित 'हाइनिशे साइतुंग' पत्र में पहले लेखक और तत्पश्चात संपादक के रूप में सम्मिलित हुए परंतु उन्हें जर्मनी में लिखने एवं बोलने की आजादी नहीं मिली। अतः मार्क्स ने 1843 में विवाह के पश्चात् पेरिस जाने का निर्णय लिया।

पेरिस में

19वीं शताब्दी के मध्य वर्षों में फ्रांस की राजधानी पेरिस में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उठापटक मची हुई थी। इस समय में कार्ल मार्क्स फ्रांसीसी क्रांति की विफलता के कारण ढूंढ़ने के प्रयास में लगे हुए थे। इस प्रयास में उन्होंने क्रांति से संबंधित ऐतिहासिक अभिलेखों का गहन अध्ययन किया। स्वभाव से जिज्ञासु कार्ल मार्क्स ने अथक परिश्रम कर एक वर्ष में कार्य पूर्ण कर लिया। ऐसा ही अध्ययन उन्होंने हीगलवाद को जानने के लिए भी किया था। इस दिशा में उन्होंने फ्रांस एवं इग्लैंड के अर्थशास्त्रियों के कार्यों का अध्ययन किया तथा फ्रांस और जर्मनी की सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं में अंतर का अध्ययन किया। उन्होंने फ्रांसीसी समाजवादी लेखकों तथा अंग्रेजी अर्थशास्त्रियों की आलोचना भी की जो इतिहास के मर्म को समझने में असमर्थ थे। मार्क्स के अनुसार उनमें गंभीरता एवं सत्यनिष्ठा जैसे भाव कम थे। कार्ल मार्क्स ने जहां हीगलवाद की भरस्क आलोचना की थी वहीं मानव समाज की संरचना के संदर्भ में हीगल के विचारों के समर्थक थे।

www.neerajbooks.com

मार्क्स एवं हीगल दोनों ही मानव इतिहास की प्रक्रिया के विभिन्न तत्त्वों के बीच औपचारिक संबंधों के पक्षधर थे। यद्यपि उन्होंने, इन तत्त्वों के संबंध में फ्रांसीसी चिन्तक सेन्ट सिमों तथा उनके शिष्यों के विचारों का अध्ययन किया। हीगल की आलोचना के परिणामस्वरूप मार्क्स को एक नवीन कार्य योजना का आधार प्राप्त हुआ। इसी समय उनकी रुचि साम्यवाद में हुई। वे एक जर्मन क्रांतिकारी फ्रेडरिक एंजल्स से मिले तथा उनकी मित्रता बहुत लंबे समय तक चली। एंजल्स की अन्य विचारकों के बौद्धिक कार्यों के विश्लेषण की प्रखरता का लाभ कार्ल मार्क्स को लेखन कार्यों में मिला। इसके अतिरिक्त, मार्क्स को एंजल्स से सुरक्षा का भाव भी मिला।

सन् 1845 में मार्क्स को पेरिस से निष्कासित कर दिया गया, क्योंकि मार्क्स, समाजवादी पत्रिका फोएरवार्टस (Vorwarts) में प्रशा के शासक राजा के विरुद्ध प्रकाशित हुई एक टिप्पणी से जुड़े थे। मार्क्स ने अपने परिवार (पत्नी एवं एक वर्षीय पुत्री) के साथ पेरिस छोड़ दिया तथा ब्रसल्स जाकर कामगारों के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन स्थापित करने का निर्णय लिया। इस प्रकार मार्क्स क्रांति के विचारदृष्टा बन गए।

क्रांतिकारी मार्क्स

कम्युनिस्ट लीग नामक कामगारों के परिसंघ के लिए कार्य करते हुए मार्क्स एक क्रांतिकारी दल के नेता बन गए। इस संगठन की विभिन्न शाखाएं अलग-अलग शहरों में थी। वर्ष 1847 में मार्क्स को पार्टी के लक्ष्य निर्धारित करने का कार्यभार सौंपा गया। 1848 में पेरिस क्रांति के कुछ सप्ताह पूर्व ही इस दस्तावेज का प्रकाशन 'द मैनेफेस्टो ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी' (1948) हुआ।

इस घोषणा-पत्र के लेखन के कारण मार्क्स को परिवार सहित बेल्जियम की राज्य-सीमा से निकाल दिया गया। फ्रांसीसी सरकार ने उन्हें पेरिस आमन्त्रित किया। इस समय पेरिस में क्रांति का दौर शुरू हो चुका था। परंतु मार्क्स, क्रांति के इस दौर से अधिक प्रभावित नहीं हुए। उन्होंने राइनलैंड जाकर अपने विचारों को प्रतिपादित करने का निश्चय किया। इस बार, उन्होंने 'न्यू राईनिशे साइतुंग' के नाम से पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया जिसमें प्रकाशित लेखों को लोग जिज्ञासु होकर पढ़ते थे। परंतु, मार्क्स के प्रशा सरकार के प्रति आक्रामक विचारों के कारण पत्रिका को जब्त कर इसका अन्तिम अंक लाल अक्षरों में प्रकाशित किया गया। मार्क्स को देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर, कोलोन के न्यायालय में उन पर मुकदमा चलाया गया। परंतु, मुकदमे की सुनवाई के दौरान निर्णायक मंडल ने उनके प्रभावशाली व्याख्यान को ध्यान में रखते हुए उन्हें सभी आरोपों से बरी कर दिया। इस व्याख्यान में उन्होंने जर्मनी तथा अन्य देशों की सामाजिक-आर्थिक दशा पर अपने विचार प्रस्तुत किए। परंतु, सरकार द्वारा उनकी नागरिकता वापस ले लिए जाने के कारण जुलाई 1849 में उन्हें राइनलैंड से भी निष्कासित कर दिया गया। अंततः उन्हें पेरिस में ही जाना पड़ा। यहां भी फ्रांसीसी सरकार ने उन्हें देश छोड़ने या आजीवन अज्ञातवास में रहने का आदेश दिया।

निष्कासन

अगस्त 1849 में कार्ल मार्क्स मित्रों के सहयोग से लंदन आ गए जहां उनका सारा जीवन (1883 तक) बीता।

इंग्लैंड पर यूरोपीय घटनाचक्र का अधिक प्रभाव न था इसलिए मार्क्स बिना किसी बौद्धिक एवं राजनीतिक गतिविधि के वहां रहे। उनका शेष जीवन निष्क्रियता एवं भौतिक निर्धनता में परिवार एवं मित्रों के साथ बीता।

वर्ष 1864 में लन्दन में वर्कर्स इन्टरनेशनल में, मार्क्स जर्मन कारीगरों के प्रतिनिधि के रूप में, कार्यकारी समिति का हिस्सा बने। उन्होंने उद्घाटन भाषण में 1848 से 1864 तक के कामगार वर्ग का सामाजिक व आर्थिक चित्रण पेश किया। मार्क्स के संचालन में इस संगठन का विकास अत्यधिक सुदृढ़ रूप से हुआ। वर्ष 1867 में मार्क्स की महान रचना 'दास केपिटल' का प्रथम खण्ड विमोचित हुआ। इसकी प्रसिद्धि के परिणामस्वरूप फ्रांसीसी, अंग्रेजी, रूसी और इतालवी भाषा में भी इसका अनुवाद किया गया। विभिन्न भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में भी इसका अनुवाद उपलब्ध है। इस कृति के द्वितीय एवं तृतीय खण्ड का संपादन एंजल्स ने मार्क्स की मृत्यु के बाद किया।

मार्क्स ने तीस वर्षों तक रूस के विरुद्ध लेख एवं व्याख्यान दिए, परंतु अंततः रूस के लोगों ने भी उनके विचारों का समर्थन किया, जिसके कारण वे आधुनिक युग के नायक बन गए। मार्क्स के जीवन का उद्देश्य पूंजीवाद की समाप्ति करना था। रूसी क्रांतिकारियों के लिए मार्क्स प्रेरणास्रोत थे। मार्क्स जीवन के अंतिम वर्षों में फेफड़ों की बीमारी से ग्रस्त थे। उनका देहांत 14 मार्च 1883 को हुआ।

सामाजिक-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

18वीं एवं 19वीं शताब्दी में औद्योगिक अर्थव्यवस्था के उद्भव के परिणामस्वरूप संपूर्ण यूरोप, विशिष्टतः इंग्लैंड में व्यापक आर्थिक बदलाव देखे गए। समाज ने सामंतवाद की बजाय पूंजीवाद का रुख किया। गांवों से औद्योगिक शहरों की ओर पलायन का सैलाब उमड़ पड़ा। व्यापार संघों के वर्चस्व में गिरावट से अर्थव्यवस्था में पूंजीवाद को विस्तार मिला। तीव्र औद्योगिकीकरण एवं अपरिपक्व कार्य दशाओं के चलते समाज में निर्धनता एवं विक्षोभ की स्थिति पनपने लगी। मार्क्स पर इन सामाजिक क्रांति की ऐतिहासिक दशाओं का अत्यधिक प्रभाव पड़ा तथा उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से आर्थिक समस्याओं की अभिव्यक्ति की। एंजल्स की कृति 'द कंडीशन ऑफ द वर्किंग क्लास इन इंग्लैंड इन 1844' के द्वारा उन्हें औद्योगिक कर्मचारियों की भयावह स्थिति का पता चला। उन्होंने तभी से मजदूर-वर्ग आंदोलनों में उत्कृष्ट भूमिका निभाई तथा साम्यवाद संबंधित तत्वज्ञान विकसित किया। उन्होंने कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो में लिखा, ''सर्वहारा वर्ग के पास खोने के लिए अपनी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बेड़ियों के सिवा कुछ नहीं है, उन्हें एक जंग जीतनी है। समस्त जगत के मजदूर यह जंग जीतने के लिए एक हों।''

अन्य विचारकों के प्रभाव

मार्क्स की रचनाओं को प्रभावित करने वाले कुछ बौद्धिक विचार नीचे प्रस्तुत किए गए हैं।

जर्मन दर्शन और आदर्शवाद

मार्क्स, छात्रावस्था में तत्कालीन जर्मन दर्शन एवं आदर्शवाद से प्रभावित हुए। उनके लेखों में जॉर्ज विल्हम फ्रेड्रिक हीगल एवं लुडविग फायरबाख का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। हीगलवाद आदर्शवाद दर्शन विचारों पर बल देता है, जिसमें सामाजिक परिवर्तन के कारणों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। हीगल ने द्वंद्व न्याय को तीन तत्त्वों के आधार पर प्रस्तुत किया है–अभिधारणा, प्रतिस्थापना तथा संश्लेषण। 'अभिधारणा' किए दिए गए समय पर समाज में 'सत्य' माने-जाने वाले विचारों को प्रस्तुत करती है। 'प्रतिस्थापना' उन्हीं विचारों की विपरीत शृंखला होती है। समय के साथ 'अभिधारणा' एवं 'प्रतिस्थापना' के बीच सामंजस्य स्थापित होता है। यह संश्लेषण भविष्य में नई अभिधारणा प्रस्तुत करता है, जिसके विरोध में नई प्रतिस्थापना का उद्भव होता है। पुनः संश्लेषण प्रस्तुत होता है। इसी प्रकार इतिहास में प्रगति होती रहती है।

हीगल में द्वंद्व-संबंधी विचारों का मार्क्स ने स्वागत किया, परंतु विचारों पर बल देने की अपेक्षा द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की अवधारणा का विकास किया। उन्होंने समाज में विकसित हो रहे परिवर्तनों को आदिम, सामंती एवं पूंजीवादी समाज से संबद्ध करके देखा। द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत उन्होंने पूंजीवादियों एवं सर्वहारा वर्ग के बीच संघर्ष एवं विरोधाभास को देखा। उनके मतानुसार, पूंजीवाद मजदूरों के शोषण पर आधारित है तथा यही शोषण, मजदूरों के विद्रोह की परिस्थितियां उत्पन्न करेगा।

जर्मन दार्शनिक लुडविग फायरबाख के लेखों ने भी मार्क्स को प्रभावित किया, जिसके अनुसार, वास्तव में इंसान भौतिक जगत में जीवनयापन करता है तथा आदर्श गुणों के लिए ईश्वर की छवि बना लेता है। मानव ईश्वरीय गुण प्राप्त करने के प्रयास में तत्पर रहता है, परंतु ऐसा संभव नहीं हो पाता। मानव ईश्वरीय गुण प्राप्त करने की होड़ में मानवीय गुणों की महत्ता से अनभिज्ञ रहता है। मार्क्स फायरबाख के द्वारा प्रतिपादित धर्म के भौतिक आधारों पर बल से आकर्षित हुए। उनके विचार में फायरबाख को धार्मिक इतरीभवन तथा आर्थिक क्रियाकलापों में संबंध स्थापित करना चाहिए था। मार्क्स के विचार में, धर्म अमीर वर्ग तथा उत्पादन साधन सम्पन्न एवं राजनीतिक दृष्टि से सबल लोगों का हस्तकौशल है, जो प्रतिदिन के कष्ट को ढक देता है।

भौतिकवाद परिप्रेक्ष्य

मार्क्स का समाज संबंधी विश्लेषण भौतिकवादी परिप्रेक्ष्य पर आधारित है। पारलौकितता के आदर्शवाद सिद्धांत के विपरीत, भौतिकवाद में प्रत्येक वस्तु का आधार स्थूलकाय पदार्थ को माना जाता है। मार्क्स के अनुसार, किसी समाज की भौतिक परिस्थितियां एवं आर्थिक उपादान मिलकर समाज का प्राधार एवं उसका विकास निर्धारित करते हैं। मार्क्स द्वारा प्रतिपादित भौतिकवाद की तुलना आदर्शवाद से जुड़ी है। आदर्शवाद की अवधारणा परम सत्य अवधारणा के माध्यम से समझी जा सकती है। भौतिकवाद के अनुसार, प्रत्येक वस्तु पदार्थ पर निर्भर करती है। भौतिकवाद में मानव अस्तित्व की यथार्थ दशाओं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार जहां भौतिकवाद, अस्तित्व की भौतिक दशाओं को महत्त्व देता है, वहीं आदर्शवाद विचार या अवधारणा को महत्त्व देता है। ऐतिहासिक भौतिकवाद सिद्धांत, समाज के विषय में मार्क्स के विचारों को दर्शाते हैं। मार्क्स के अनुसार, भौतिक दशाएं तथा आर्थिक कारक समाज की संरचना और विकास को प्रभावित करते हैं।

ऐतिहासिक भौतिकवाद के तीन मुख्य सिद्धांत हैं–

(i) समाज की आर्थिक संरचना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

(ii) अर्थव्यवस्था समाज में राजनीति और संस्कृति का निर्धारण करती है।

(iii) आर्थिक संरचना राजनीतिक एवं विधिक अधिसंरचना निर्धारित करती है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद सिद्धांतों के माध्यम से मार्क्स ने मानव समाजों का चरणबद्ध क्रमिक विकास प्रस्तुत किया है। यह क्रमिक विकास भौतिक एवं आर्थिक आधारों में परिवर्तन के आधार पर किया गया है।

मार्क्स ने 'ए कंट्रीब्यूशन टू द क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकॉनोमी' के प्राक्कथन में कहा है कि मनुष्य अस्तित्व का निर्धारण सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर होता है न कि अंतःकरण के आधार पर। समाज एक ऐसा विचार है, जो अर्थव्यवस्था में अपना आधार रखता है–इसे अवसंरचना की संज्ञा दी गई है। समाज की कानून एवं राजनीतिक विचारधारा का आधार उत्पादन प्रणाली है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक पहलू जैसे इतिहास, धर्म, शिक्षा, न्याय आदि भी आर्थिक संरचना द्वारा ही प्रभावित होते हैं। समय के साथ विकसित होती उत्पादन शक्तियां, उत्पादन के विद्यमान संबंधों को खंडित कर देती है एवं नए उत्पादन संबंधों का विकास करती है। इस प्रकार, उत्पादन शक्तियों एवं उत्पादन संबंधों के बीच के द्वंद्व (संघर्ष) को प्रगति की रचनात्मक शक्ति के रूप में देखा जाता है।

मार्क्स ने मानव इतिहास को उत्पादन की चार रीतियों के रूप में वर्णित किया है–एशियाई, प्राचीन, सामंती एवं पूंजीवादी इनमें से पश्चिमी समाजों ने उत्पादन की प्राचीन, सामंती एवं पूंजीवादी रीतियों का क्रमानुसार अनुसरण किया है, जबकि उत्पादन की एशियाई रीति में भूमि का स्वामित्व साम्प्रदायिक, प्रबल नातेदारी संबंध तथा राज्य शासित उत्पादन प्रक्रिया और श्रमिक वर्ग पाए जाते

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

हैं। मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी रीति के बाद समाजवाद-साम्यवाद का प्रसार होगा। प्रत्येक उत्पादन रीति में एक विशिष्ट वर्ग ही उत्पादन साधनों पर अधिपत्य रखता है। उत्पादन प्रक्रिया एवं साधन स्वामित्व के द्वारा ही उत्पादन संबंध एवं वर्ग संबंध निर्धारित होते हैं। उत्पादन की विभिन्न रीतियों में अलग-अलग अभिलक्षण होते हैं, जैसे–पूंजीवाद में मजदूरी पाना, प्राचीन रीति में दास प्रथा, सामंतवाद में कृषि दासता तथा एशियाई रीति में नौकरशाही के प्रति लोगों की अधीनता।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था परिप्रेक्ष्य

राजनीतिक एवं अर्थव्यवस्था के बीच संबंधों से विभिन्न राजनीतिक नीतियों का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव आंका जा सकता है, जैसे आर्थिक संवृद्धि, व्यापार, रोजगार, समाज एवं धर्मों के विभिन्न वर्गों के बीच आय असमानता आदि। एन्जल्स के अनुसार, राजनीतिक अर्थव्यवस्था में, जीवनयापन के भौतिक साधनों के उत्पादन और विनिमय को नियंत्रित करने वाले कानून शामिल होते हैं। मार्क्स द्वारा विकसित राजनीतिक अर्थव्यवस्था की आलोचनाओं में से दो का उल्लेख 'गिडन्स' (1998) ने किया है। प्रथम, पूंजीवाद का अभिलक्षण दिखाने वाली उत्पादन दशाएं, अर्थव्यवस्था के सभी रूपों में देखी जा सकती है। द्वितीय, अर्थशास्त्री प्रत्येक वस्तु को आर्थिक मूल्य तथा आर्थिक संबंधों में लघुकृत कर देते हैं। मार्क्स प्रश्न करते है कि राजनीति अर्थव्यवस्था प्रारूप में, ऐसे लोगों का अस्तित्व क्या है, जो उत्पादन प्रक्रिया में सम्मिलित ही नहीं हैं जैसे बेरोजगार, भिखारी आदि। अतः आर्थिक श्रेणियों में वस्तुओं तथा लोगों का लघुकरण उपयुक्त नहीं है। मार्क्स ने पूंजीवादी रीति में पूंजीपतियों द्वारा मुनाफा हड़पने का विरोध किया है। ऐसा करने के कारण, मजदूरों का उत्पादन प्रक्रिया एवं उत्पाद दोनों से कोई संबंध नहीं रह जाता। मार्क्स ने इसे 'श्रमिक का विसंबंध' (Alienation) की संज्ञा दी है।

मार्क्स ने प्रत्येक वस्तु के दो मूल्य बताए हैं–उपभोग में 'प्रयोग मूल्य', अन्य उत्पादों के साथ लेन-देन में 'विनिमय-मूल्य'।

एडम स्मिथ और डेविड रिकार्डो के शब्दों में, ''मानव श्रमशक्ति ही किसी वस्तु को उसके प्रयोग एवं विनिमय-मूल्य की दृष्टि से मूल्यवान बनाती है। मार्क्स ने इसी प्रस्थापना का प्रयोग अधिशेष मूल्य और अधिशेष श्रम का निर्गमन स्पष्ट करने के लिए किया। पूंजीपति वर्ग मानवश्रम के प्रयोग से वस्तु का उत्पादन तथा विक्रय करता है। पूंजीपति अधिकतम उत्पादन के द्वारा मानवश्रम को कम रखने की कोशिश करते हैं। इस प्रयास में मानव श्रम का शोषण श्रमिकों में अन्यीभवन का भाव तथा सामाजिक क्रांति लाने की ओर प्रेरित करता है।

मुख्य विचार

मार्क्स ने अपने लेखों के माध्यम से अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवधारणाएं विकसित की हैं।

विसंबंध

मार्क्स को विसंबंध की संकल्पना की प्रेरणा हीगल से मिली है। हीगल की विचारधारा के अनुसार, मनुष्य अपनी धारणाओं को स्वयं से अलग समझता है तथा भविष्य में इस विसंबंध को वश में कर लेते हैं। जबकि फायरबाख ने इस अवधारणा को अस्वीकार किया कि विचार पराभौतिक अर्थ में मनुष्य से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। उनके अनुसार, ईश्वर ही सर्वोत्तम गुणों की मूर्त है, जो मनुष्य द्वारा स्वयं से भिन्न समझी जाती है। मार्क्स ने विसंबंध की अवधारणा को स्वीकार करते हुए, चेतना संबंधी विचार को निरस्त किया है। मार्क्स के अनुसार, अपनी मेहनत से बनाई गई वस्तुओं से पृथक्करण का भाव विसंबंध कहलाता है। जैसे बढ़ई द्वारा बनाई गई कुर्सी का प्रयोग विक्रय के लिए किया जाना विसंबंध कहलाता है। विसंबंध चार प्रकार का होता है–

1. श्रमिकों का अपनी बनाई वस्तुओं पर नियंत्रण नहीं होता।
2. श्रमिक वेतन के बदले श्रम को बेच देते हैं अतः उनके क्रियाकलाप पर उनका ही नियंत्रण नहीं होता।
3. श्रमिकों को बिना किसी रचनात्मकता या मानसिक वचनबद्धता के यांत्रिक रूप से उत्पादन दर्शाना होता है।
4. श्रमिकों का निजी श्रम उनमें प्रतिस्पर्धात्मक भाव जागृत कर परस्पर अलग करता है।

वर्ग और अधीनता का संबंध

मार्क्स के अनुसार, सामाजिक वर्गों का उत्पादन प्रक्रिया में तथा उत्पादन संबंधों में विशिष्ट स्थान है। मानव इतिहास के आरंभ में भूमि पर अधिपत्य किसी विशिष्ट व्यक्ति या समूह का नहीं होता था। इसे वर्ग विहीन समाज के रूप में देखा जाता था। मार्क्स की पुस्तक 'कैपिटल' में आय के तीन स्रोतों से संबद्ध तीन वर्गों का वर्णन किया गया है–

(क) श्रम आधारित श्रम शक्ति तथा श्रमिकों के स्वामी,
(ख) लाभ अथवा अधिशेष मूल्य आधारित पूंजीपति तथा
(ग) लगान आधारित भूस्वामी।

मार्क्स के दो लेखों 'रिवुल्यूशन एंड काउंटर रिवुल्यूशन इन जर्मनी' तथा 'द क्लास स्ट्रगल इन फ्रांस में दो अलग प्रकार की वर्ग संरचनाएं पाई जाती हैं। उत्पादन साधनों के स्वामित्व के आधार पर धनी (पूंजीपति) और निर्धन (सर्वहारा वर्ग) वर्गों का उल्लेख किया गया है। इनमें आधिपत्य एवं अधीनता का संबंध होता है। मध्यवर्ग में उत्पाद साधनों पर नियंत्रण रखने वाले पूंजीपति शामिल हैं। इस प्रकार, उत्पादन साधनों के नियंत्रक 'स्वयं में वर्ग' तथा शोषणकारी दशा के विरुद्ध क्रांति का हथियार प्रयोग करने वाले 'स्वयं के लिए वर्ग' नामक दो अवधारणाएं हैं।

इस प्रकार, प्रत्येक ऐतिहासिक चरण में इन दो प्रकार के वर्गों की उपस्थिति होती है जैसे प्राचीन समाज में स्वामी और दास, सामंती समाज में जमींदार और कृषिदास तथा पूंजीवाद समाज में

www.neerajbooks.com